मिला। सामुदायिक प्रयास होने के कारण लोगों ने आगे बढ़कर उत्साह दिखाया और पूरे प्रक्रिया की समुचित देख-रेख में लगे रहे। एक निश्चित अन्तराल पर नालियों के साफ-सफाई की भी व्यवस्था की गई। साथ में कूड़ा प्रबन्धन की भी उचित व्यवस्था की गई जिससे नालियों में कूड़ा न जाये और जल निकासी पुन: अवरूद्ध न हो। इस बीच समुदाय के लोगों ने नगर निगम से लगातार पैरवी व सम्पर्क बनाये रखा। जिसका परिणाम भी सकारात्मक हुआ, उस क्षेत्र विशेष में नगर निगम द्वारा साफ-सफाई का समुचित ध्यान दिया गया।

लाभार्थी परिवारों की संख्या

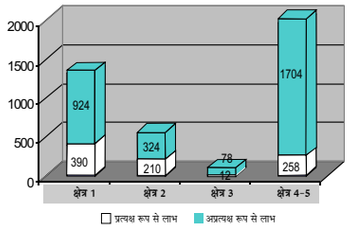

साफ-सफाई की बारम्बारता

कार्य	पहले	अब
नालियों की सफाई	10-15 दिन	03-04 दिन
बड़े नालों की साफ-सफाई	वर्षवार	06 माह पर
सड़कों की साफ-सफाई	8-10 दिन	02-03 दिन
कूड़ो का उठना	7-8 दिन	02-03 दिन

अब इस सफलता के बाद समुदाय की विभिन्न कमेटी के लोग शहर में अन्य वार्ड के लोगों व पाषर्दों से मिलकर अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर रहे हैं जिससे कि इस तरह की पहल अन्य क्षेत्रों में भी की जाये, और शहर के लोगों को जल-जमाव से छुटकारा मिल सके।

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर-273001
दूरभाष : 91 551 2230004 फैक्स : 91 551 2230005
ई-मेल : geag@geagindia.org, geagindia@gmail.com
वेबसाइट : http://www.geagindia.org

एशियन सिटीज़ क्लाइमेट चेंज रिजीलियन्स नेटवर्क
(एसीसीसीआरएन)

सामुदायिक पहल : विकेन्द्रीकृत जल निकासी तंत्र

'वार्ड महेवा'

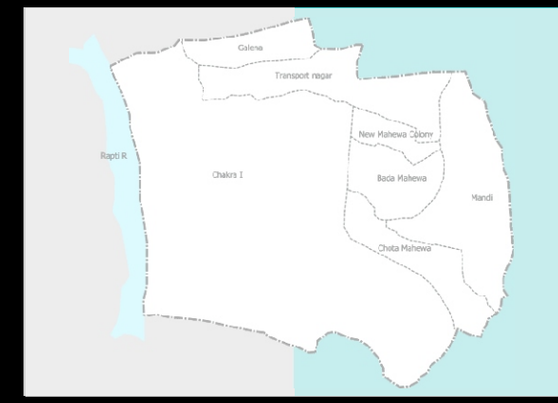

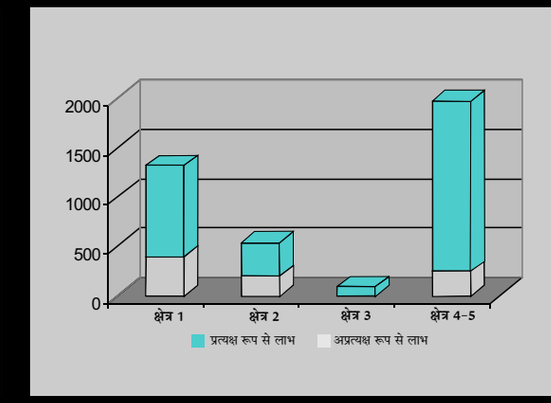

गोरखपुर शहर के 70 वार्डों में से एक वार्ड है महेवा, जो शहर के दक्षिणी-पश्चिमी किनारे पर अवस्थित है। यह वार्ड बंधे के दोनों किनारों पर बसे होने के कारण बाढ़ व जल-जमाव की समस्या से ग्रस्त है। गोरखपुर शहर के लिए यह समस्या नई नहीं है, शहर के 31 वार्ड, नगर निगम द्वारा जल-जमाव क्षेत्र के रूप में चिन्हित किये जा चुके हैं जिनमें विभिन्न स्थानों पर वर्ष में एक से चार माह तक जल-जमाव बना रहता है और आवागमन बाधित रहता है।

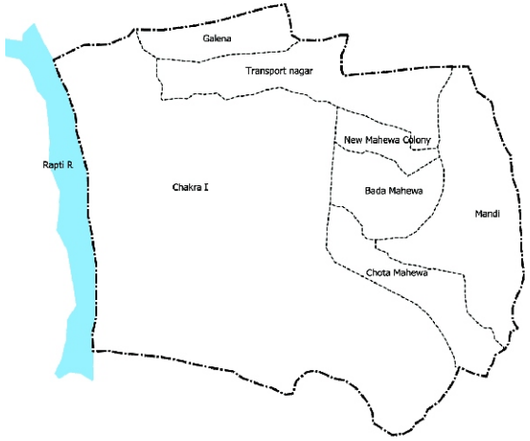

महेवा वार्ड की अवस्थिति

महेवा वार्ड जो कि 6 मुहल्लों से मिलकर बना है, इसका चयन वार्ड स्तरीय सूक्ष्म नियोजन द्वारा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने हेतु किया गया। इसमें समुदाय को जागरूक कर उन्हें स्थानीय समस्याओं हेतु पहल करने को तैयार किया गया।

विकेन्द्रीकृत प्रक्रिया

सूक्ष्म नियोजन के दौरान जल जमाव प्रमुख समस्या के तौर पर सामने आया। मोहल्ले स्तर पर गठित मुहल्ला समिति व वार्ड स्तर पर गठित जल निकासी समिति के सदस्यों के साथ एक खुली बैठक में चर्चा की गई कि इस समस्या का समाधान क्या हो सकता है, इस प्रक्रिया में एक विकेन्द्रीकृत जल निकासी तंत्र विकसित करने की योजना सामने आई। इसमें सबसे पहले उन स्थानों का चयन किया गया जहाँ जल-जमाव का सबसे अधिक प्रभाव था। समुदाय द्वारा ऐसे 5 स्थान चयनित किये गये और यह भी तय किया गया कि कोई नया निर्माण न करके पुरानी नालियों की मरम्मत और उन सबका मुख्य नालियों से जुड़ाव व साफ-सफाई का कार्य इसके अन्तर्गत किया जायेगा। तदुपरान्त सभी प्रभावित क्षेत्रों के नालियों की नाप-जोख की गई।

नालियों की लम्बाई (मी०)

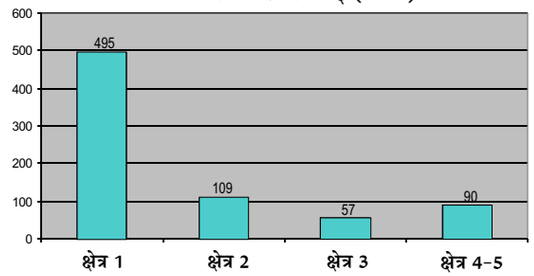

हर स्थान पर समुदाय के लोगों ने अपने-अपने क्षेत्र की नालियों को मुख्य नालियों से जोड़ने की योजना पर कार्य प्रारम्भ कर दिया। नालियों की नाप के बाद सभी नालियों का समुदाय के सहयोग से एक नक्शा तैयार किया गया और इन नक्शों को मोहल्ला समिति एवं जल निकासी विषयक समिति को दिखाया गया । उनका सुझाव लेकर पुन: नक्शे को अन्तिम रूप दिया गया।

समुदाय द्वारा अनुमोदन के बाद उन नालियों के निर्माण/सुधार में लगने वाले खर्चों का विवरण तैयार किया गया। प्रत्येक क्षेत्र में लगने वाले खर्चों का अनुमान स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री एवं पारश्रमिक के आधार पर तैयार किया गया। उसके बाद प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित लोगों के साथ उक्त योजना के क्रियान्वयन में लगने वाली धनराशि की व्यवस्था हेतु चर्चा की गई।

चर्चा के दौरान लोगों ने समुदाय से सहयोग राशि इकट्ठा करने की बात की। साथ ही बहुत से लोगों ने पैसे-रूपये की जगह नाली निर्माण में लगने वाली सामग्री और स्वयं का श्रम, मजदूरी आदि करके सहयोग देने की बात की। इन सबकी एक सूची तैयार की गई जिससे सबके योगदान और सहभागिता की निगरानी भी हो सके। तदुपरान्त सभी सामग्री एकत्र हो जाने पर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया।

समुदाय का योगदान (प्रतिशत)

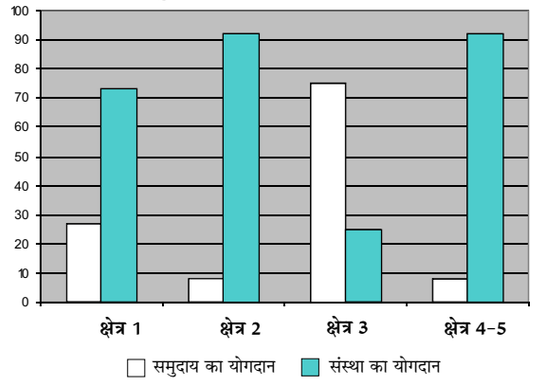

दो महीने के समय में क्षेत्र की 751 मीटर नालियाँ मुख्य नालियों से जोड़ दी गई। गलान मुहल्ले में समुदाय व नगर निगम के सहयोग से एक रेग्यूलेटर भी लगवाया गया ताकि अन्य क्षेत्रों का पानी वहाँ न एकत्र हो सके। इस पूरी अवधि में समुदाय के विभिन्न समूहों ने निर्माण कार्य की निगरानी की।

प्रक्रिया का स्वरूप

- समुदाय द्वारा स्थान का चयन
- समुदाय के साथ नियोजन करना
- नाली के निर्माण/ सुधार में लगने वाले व्यय की गणना
- संसाधन की व्यवस्था हेतु समुदाय की सक्रिय भागीदारी
- शहर स्तर पर पैरवी करना
- नाली निर्माण के दौरान समुदाय द्वारा नेतृत्व
- अन्य विषयक समिति से समन्वय स्थापित करना
- शहर के अन्दर अन्य वार्डों में प्रसारित करना

जल निकासी तंत्र का प्रभाव

नाली निर्माण के उपरान्त क्षेत्र में जल जमाव का प्रभाव अत्यन्त कम हुआ इसे उपरोक्त आंकड़ों से समझा जा सकता है। वर्ष 2010 में इन 5 स्थानों पर 10 से 20 दिनों तक जल जमाव रहता था जो अब घंटों में तब्दील हो गया है। क्षेत्र के लोगों को इससे बहुत राहत हुई। इस बीच नगर निगम से पैरवी करके सड़क निर्माण का कार्य भी कराया गया जिससे आवागमन सुचारू हो गया है।

जल-जमाव की स्थिति

साइट संख्या	2010	2011	2012
क्षेत्र 1	15 से 18 दिन	10 से 18 दिन	3 से 5 घण्टे
क्षेत्र 2	8 से 10 दिन	8 से 10 दिन	0.5 से 1 घण्टे
क्षेत्र 3	3 से 4 घण्टे	3 से 4 घण्टे	मुक्त
क्षेत्र 4 एवं 5	10 से 15 दिन	12 से 18 दिन	मुक्त

उपरोक्त कार्यवाही के उपरान्त इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 4000 लोगों को जल जमाव से छुटकारा